पशु अधिकार :उन्मूलनवाद दृष्टिकोण

उन्मूलनवाद का व्यावहारिक मतलब क्या है?

शायद आप यह पूछ रहें होंगे की आप जानवरों के शोषण को कैसे समाप्त कर सकते हैं।

आप कुछ ज़रूर कर सकते हैं।

आप वीगन बन सकते हैं। अभी। वीगन बन्ने का मतलब है की आप ना जानवरों को खाएँगे और ना उनसे बने पधार्थ का उपयोग करेंगे।

वीगनिस्म केवल आप क्या खातें है के बारे में नहीं है। यह हमारे उन्मूलनवाद के प्रति व्यक्तिगत स्तर पर एक नैतिक और राजनैतिक प्रतिबधता है। यह हमारे खाने के एलावा हम जो पहनते हैं , अन्य वस्तू, हमारे व्यक्तिगत कार्यों व अन्य विकल्पों पर भी लागू होता है।

वीगन होना एक ऐसी चीज़ है जो हम आज कर सकते है। ऐसा करने से हम जानवरों की मदद कर सकते है। यह सब करने के लिए हमें कोई संगठन का हिस्सा होने की ज़रूरत नहीं है। हमें कोई महेंगा अभियान चलाने के भी ज़रूरत नहीं। हमें कोई क़ानून भी नहीं लागू कराना होगा। हमें केवल यह पहचानना होगा की यदि हम पशु अधिकार में विश्वास करते हैं तो हमें जानवरों की हत्या और उनको खाना दोनो को गलत ठहराना होगा।

वीगनिस्म से हम जानवरों को होने वाली तकलीफ़ को कम कर सकते है। हम इससे उनके मारे जाने को भी कम कर सकते हैं, क्योंकि जब ज़्यादा संख्या में लोग वीगन बनेंगे तो अपने आप जानवरों से मिले मास और अन्य पधारथों की माँग भी कम हो जाएगी।

वीगनिस्म अहिमसा में विश्वास रखता है। पशु आंदोलन को एक शांतिप्रिय आंदोलन होना चाहिए। इस आंदोलन को हिंसा को धितकारना चाहिए- चाहे वो इंसान या पशु के साथ हो रही हो।

पशु अधिकार के लिए लड़ना राजनैतिक साक्रीयता का एक ज़रुरी हिसा है।

जब आप वीगन बन जाएँ तो फिर आप अपने परिवार, दोस्तों और मोहल्ले वालों को भी वीगनिस्म के बारे में सिखा सकते है।

पशु शोषण को ख़त्म करने के लिए वीगन आंदोलन ज़रूरी है। और वीगन आंदोलन एक नीजी फ़ैसले से ही शुरू होती है।

www.AbolitionistApproach.com

मास को छोड़ दें तो बाक़ी पशु से मिलने वाले पधार्थ के उपयोग में क्या बुरायी है?

मास, दूध या फिर कोई अन्य पशु पधार्थ में कोई फ़र्क़ नहीं है। जो जानवर इस काम के लिए पाले जाते है उनको उसी बेरहमी से रखा जाता है और अंत में उन्हें भी मार डाला जाता है। इस के बाद उनके मास को भी इंसान खाते है।

> दूध, अंडे और आइस क्रीम के उत्पाध में जानवरों को उतनी ही पीड़ा और मौत सहनी पड़ती है जितना मास के उतपाद व सेवन से।

जब तक ९९ प्रतीशत लोग यह मानते है के जानवरों के उपयोग में कोई ग़लती नहीं है तब तक जानवरों के लिए कुछ भी नहीं बदलेगा।

तो.....

फ़ैसला आप का है। यह फ़ैसला आप के लिए कोई और नहीं ले सकता। परंतु अगर आप यह मानते है के जानवरों का नैतिक मूल है , तो उनके मौत में भाग्यादार मत बने। जानवरों की देख़बाल कितनी ही नम्रता से क्यों नहीं की जाए उनका उपयोग गलत है।

और जानकारी के लिए इन वेब साइट पर जाएँ।

www.AbolitionistApproach.com

www.HowDoIGoVegan.com

© २००८गैरी एल. फ़्रांसीओन और एना ई. चार्लटेन
किसी व्यक्ति के द्वारा इस पत्तरिका का बाँटने का मतलब नहीं है की लेख़ख ऊस व्यक्ति या संस्था के सभी विचारों से सहमत है। उन की सहमती केवल जो पत्रिका में लिखा गया है,उसी तक सीमित है।

पशु अधिकार :
उन्मूलनवादी दृष्टिकोने

www.AbolitionistApproach.com

जानवर : हमारा नैतिक दोहरापन

हम ये दावा करते है की हम जानवरों के बारे में गम्भीरता से सोचते है।

हम मानते है के बिना वजह जानवरों को तकलीफ़ देना या फिर उन्हें मारना गलत है। पर इस से हम क्या समझते है?

हम ये तो मानेगे के अपने मनोरंजन या मात्र सुविधा के लिए जानवरों को मारना या तकलीफ़ पहोंचाना गलत है। ऐसा करना क्यों की यह हमारी आदत बन गयी है भी गलत है।

परंतु जानवरों का अधिकतर उपयोग हम इन्हीं वजाओं के लिए करते है।

अधिकतर जानवर खाने के लिए मारे जाते है। फ़ूड एंड ऐग्रिकल्चर ऑर्गनायज़ेशन (FAO), कहता है की इंसान ५३अरब जानवरों को हर साल मरते है। इस संख्या में समुन्दर के जीव व मछली शामिल नहीं है।

१४५० लाख..................................हर दिन मारे जाते है।
६० लाख ....हर घंटे मारे जाते है।
१००,००० जानवर ....हर मिनट मारे जाते है।
१६८० जानवर .... हर सेकंड मारे जाते है।

यह संख्या बड़ती जा रही है और इस सदी के दूसरे हिसए में दुगनी हो जाएगी ।

हम पशु वध को उचित कैसे ठहरा सकते हैं?

पशु पधार्थ के सवन से हमारी सेहत बेहतर नहीं होती। यह साफ़ है की ऐसा नहीं है। उलटा ये साबित होता जा रहा है की पशु उत्पाद सेहत को नुक़सान पोहोंचाते है।

ये कहना गलत होगा की हम सदियों से जानवरों का उपयोग करते आएं है इस लिए ये सही है। सदियों से हम दूसरे लोगों के साथ उनकी जाती या लिंग की वजय से भेदभाव करते आएं है, परंतु नैतिक रूप से ये गलत है।

हम पशु वध को इस आधार पर सही नहीं कह सकते है की ये परिस्थितिक तंत्र के लिए ज़रूरी है।

- फ.अ .ओ के मुताबिक पशु कृषि से पैदा होने वाले ग्रीन हाउस गसेस गाड़ी, ट्रक और अन्य वाहन से पैदा होने वाले गसेस से ज़्यादा है।
- पशुधन कृषि पृथ्वी पर उपयोगी ज़मीन का ३० प्रतिशत तक का उपयोग करता है। ३३ प्रतिशत कृषि लायक ज़मीन जानवरों के चारे के उपयोग में जाती है।
- पशु कृषि के लिए वन काटे जा रहे हैं। इस ज़मीन को पशु चराई के लिए इस्तमाल किया जाता है। संघनन और कटाव से भूमि अधोगति हो रही है।
- धरती के जल संसाधन कम होते जा रहे हैं। पशु कृषि से इन पर और भर पड रहा है। पशु कृषि के लिए बड़ी मात्र में जल का उपयोग होता है। इस से पानी भी प्रधूषित होता है।
- जानवर से हम प्रोटीन प्राप्त करते है। पर इस के लिए हमें उन्हें उतपाद हुए प्रोटीन से ज़्यादा प्रोटीन खिलाना पड़ता है। १ किलो पशु प्रोटीन के उतपद में ६ किलो या १३ पाउंड चारा प्रोटीन लग जाता है।
- १ किलो मास के उतपाद के लिए १ लाख लीटर पानी लगता है। १ किलो गेहूँ के उतपाद में केवल ९०० लीटर पानी का इस्तमाल होता है।

पशु चारा खाकर प्रोटीन देते है। परंतु वो ज़्यादा प्रोटीन खाकर उससे कम प्रोटीन का उतपाद करते है। जो अनाज इंसान खा सकते थे वो जानवरों को खिलाया जाता है। इस लिए पशु कृषि इंसानो को भूखमरी के घाट उतार देता है।

५३ अरब जानवरों को मौत के घाट उतरने का और उन पर अत्याचार धोने का हमारे पास एक ही जवाब है- यह हमारी आदत है, हमें मास का स्वाद पसंद है, इस से हमें आनंद मिलता है।

याने की हमारे पास ऐसा करने का कोई जाइज जवाब नहीं है।

गैरमनुष्यों के बारे मैं हमारी सोच बड़ी उलझन मैं है।

हम में से बहुत लोग जानवरों के साथ रहते है या रह चूके हैं। इन जानवरों में कूते, बिल्ली, ख़रगोश शामिल है। वो हमारे परिवार का ज़रूरी हिस्सा हैं। उनकी मौत पर हम उदास हो जाते है और शोक मानाते है।

तो फिर हम दूसरे जानवरों को क्यों खाते है? इस का कोई मतलब नहीं बनता।

पशुओं के प्रति हमारा व्यवहार।

हम जानवरों का उपयोग ऐसी चीज़ों के लिए करते है जो ज़रूरी नहीं है। अगर हम ऐसा व्यवहार इंसानो के साथ करते तो इसे अत्याचार माना जाता।

जब तक हम जानवरों को वस्तु मानेगे सारे पशु कल्याण क़ानून बेकार है।

जानवर हमारी संपत्ती बनकर रेह जाते है , उनकी वोही क़ीमत होती है जो हम तय करते है। क़ानून के हिसाब से वो कोई कार, फ़र्निचर या अन्य वस्तु के ही बराबर है और क़ानून उन्हें वोही दर्जा देता है।

क्योंकी पशु हमारी संपत्ती है हम लोगों को यह आज़ादी देते है के वो जैसा चाहें वैसा व्याहर जानवर के साथ करें, चाहे फिर ऐसा करने से जानवर को कितनी ही तकलीफ़ हो।

बेहतर क़ानून या उद्योग मानक काम क्यों नहीं करेंगे ?

अमेरिका और युरप के पशु सुरक्षा संगठन ये मानते है के पशु कल्याण क़ानून में सुधार से पशु शोषण ख़त्म हो जाएगा। वे ये भी मानते है के पशु उद्योग पर ज़ोर डाला जाना चाहिए और इस ज़ोर से वो जानवरों की बेहतर देख़बाल करेंगे। इस लिए वे ज़्यादा जगा देने वाले पिंजरों और ज़्यादा मानवता से दी गयी मौत की माँग करते है। यह संगठन कहते हैं की ऐसा करने से जानवरों का उपयोग ही इक दिन ख़त्म हो जाएगा।

तो क्या ये जवाब है? नहीं।

आर्थिक सच तो यह है पशु कल्याण ना के बराबर असर कर रहा है। पिंजरे के बाहर रखे गयी मुर्ग़ी को उतनी ही तकलीफ़ होती है जितनी पिंजरे के अंदर रखी गयी मुर्ग़ी। दोनो के अंडे खाना गलत है।

> क्योंकी लोगों का विश्वास है की जानवरों का उपयोग मानवता व नम्रता से किया जा रहा है, वो इस उपयोग को गलत नहीं मानेगे। इस लिए इस उपयोग को बड़ावा मिलता है। जानवरों की तकलीफ़ और बढ़ जाती है और उन्हें और ज़्यादा संख्या में मारा जाता है।

पशु कल्याण आंदोलन जानवरों के लिए सुधार ला रहा हैं या फिर पशु शोषण ख़त्म कर रहा है ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला है। पशु कल्याण आंदोलन को २०० साल हो चले हैं परंतु आज हम जानवरों को ज़्यादा भयानक तरीक़ों से मार रहें है। ऐसा अत्याचार इतिहास में पहले कभी नहीं देखने को मिला है।

ऐक बुनियादी सवाल तो रह जाता है- जानवरों के उपयोग को सही कहने के लिए हमारे पास क्या औचित्य है, चाहे ये उपयोग कितनी ही नम्रता से क्यों ना की जाए ?

तो जवाब क्या है ?

जवाब ये है की हम पशु शोषण को ख़त्म कर दें, उसको विनियमित करने की कोशिश ना करें। अगर हम हर इंसान को यह बुनियादी हक़ देते है की वे किसी की संपती नहीं है तो हमें यही हक़ हर संवेदनशील जीव, मानव या ग़ैरमानव को भी देना चाहिए।